

**नौकरी की किताब**  
**सत्र 6: नौकरी की पुस्तक का उद्देश्य**  
**जॉन वाल्टन द्वारा**

यह डॉ. जॉन वाल्टन है और यह अय्यूब की पुस्तक पर शिक्षण है। यह सत्र 6 है, पुस्तक का उद्देश्य।

**परिचय [00:22-1:07]**

तो, अब हम वास्तव में महत्वपूर्ण मुद्दों पर आ रहे हैं। आइए बात करें कि नौकरी की पुस्तक का उद्देश्य क्या है। हमने इस बारे में बात की है कि इसमें किस प्रकार अधिकार है और हमें ईश्वर का रहस्योद्घाटन करने के लिए प्रेरित और प्रेरित करता है। तो, हमने इसकी सेटिंग, इसकी शैली, तिथि और लेखकत्व के मुद्दों के बारे में बात की है, लेकिन अब, पुस्तक का उद्देश्य क्या है?

आलंकारिक रणनीति से उद्देश्य की पूर्ति होती है। संरचना के माध्यम से उद्देश्य की पूर्ति होती है। लेकिन हमें पुस्तक का उद्देश्य क्या लगता है?

जब हमने अपनी कुछ गलतफहमियों के बारे में बात की, तो हमने इस विचार के बारे में बात की कि अय्यूब पर मुकदमा नहीं चल रहा है। यह अय्यूब वगैरह से ज़्यादा ईश्वर के बारे में है। तो, आइए इसे कुछ विशिष्टता दें।

**उद्देश्य [1:07-2:16]**

यह पुस्तक हमें यह सीखने में मदद करती है कि आपदा आने पर ईश्वर के बारे में कैसे अच्छा सोचना चाहिए। जब आपदा आती है तो हम ईश्वर के बारे में सही और उचित तरीके से कैसे सोचते हैं? मैं यह सुझाव देना चाहूँगा कि पुस्तक का उद्देश्य ईश्वर की नीतियों का पता लगाना है। ईश्वर संसार में कैसे कार्य करता है?

हम सोचते हैं कि यदि ईश्वर अच्छा है और ईश्वर सर्वशक्तिमान है, तो उसे दुखों को रोकने में सक्षम होना चाहिए। और इसलिए, हमें आश्चर्य होता है कि जब हम पीड़ा का सामना करते हैं, खासकर उन लोगों की पीड़ा का सामना करते हैं जो पूरी तरह से अयोग्य लगते हैं तो भगवान क्या कर रहे हैं। हम परमेश्वर की नीतियों के बारे में कैसे सोचते हैं? वह दुनिया में कैसे काम करता है? मैं आपको यह

सुझाव दूँगा कि वास्तव में यह पुस्तक हमें समझने में मदद करने का प्रयास करेगी। भगवान दुनिया में कैसे काम करता है, खासकर जब हम पीड़ित होते हैं?

### **चुनौती देने वाले का आरोप: धर्मी को पुरस्कृत करना अच्छा नहीं है [2:16-5:49]**

अब, पुस्तक में अलग-अलग दिशाओं से ईश्वर पर लगाए गए दो आरोपों को शामिल किया गया है। हमारे पास स्वर्ग में प्रतिद्वंद्वी, प्रतिपक्षी, चुनौती देने वाला है, जिसे कभी-कभी शैतान भी कहा जाता है। हम थोड़ी देर में उस तक पहुंचेंगे। यह एक और व्याख्यान है, लेकिन आइए अभी उसे "चुनौती देने वाला" कहें। हमें चुनौती देने वाला मिल गया है, और जब चुनौती देने वाला भगवान के सामने खड़ा होता है, तो भगवान अय्यूब की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं। "क्या तुमने मेरे नौकर अय्यूब पर विचार किया है? उसके तुल्य कोई नहीं है।" फिर, अय्यूब का वर्णन अत्यंत न्यायसंगत और धर्मसम्मत है, सर्वोत्तम व्यक्ति हो सकता है।

और याद रखें कि चुनौती देने वाले का प्रश्न है: "क्या अय्यूब बिना कुछ लिए परमेश्वर की सेवा करता है?" अब, ऐसा लगता है कि यह अय्यूब की प्रेरणाओं के बारे में एक प्रश्न है, और यह बिल्कुल सीधे तौर पर यही है। अय्यूब वास्तव में उस प्रकार का व्यक्ति बनने के लिए क्या प्रेरित करता है जैसा वह है?

लेकिन उस प्रश्न में अंतर्निहित है, और मुझे लगता है कि इसका वास्तविक फोकस इस बात से है कि ईश्वर चीजों को कैसे काम करता है, ईश्वर की नीतियां क्या हैं। तो, वास्तव में चुनौती देने वाला यह पूछ रहा है: हे भगवान, क्या आपके लिए धर्मी लोगों के लिए समृद्धि लाना एक अच्छी नीति है? यह काफी तार्किक लगता है लेकिन इसके बारे में सोचें। यदि धर्मी लोगों को उनकी धार्मिकता के कारण सभी प्रकार के लाभ और समृद्धि और सफलता और अच्छा स्वास्थ्य, हर प्रकार के लाभ मिलते रहते हैं, तो क्या आप वास्तव में उन्हें भाड़े के सैनिक बनने के लिए प्रशिक्षित नहीं कर रहे हैं? क्या आप वास्तव में उन्हें धर्मी होने का एक गुप्त उद्देश्य नहीं दे रहे हैं? यदि आप धर्मी लोगों को लाभ देने में पर्याप्त समय व्यतीत करते हैं, तो आप उन्हें धार्मिकता की परवाह करने के बजाय लाभों की लालसा करने के लिए प्रशिक्षित करते हैं।

आप उन्हें अलग ढंग से सोचने के लिए प्रशिक्षित करें। वह भिन्न प्रकार की सोच वास्तव में सच्ची धार्मिकता के लिए विध्वंसक है क्योंकि जितना अधिक व्यक्ति निर्णय लेगा कि उन्हें लाभ पसंद है, उतना ही कम वह सच्ची धार्मिकता के बारे में सोचेगा। आपको इस पर पुनर्विचार करना चाहिए, भगवान। क्या नेक लोगों के लिए समृद्धि लाना एक अच्छी नीति है? क्या यह वास्तव में आपके सर्वोत्तम हित में और सच्ची धार्मिकता के सर्वोत्तम हित में है? यह किसी व्यक्ति की प्रेरणा को भ्रष्ट करता है, अच्छी नीति को नहीं।

अब, हम इस चुनौती देने वाले के बारे में जो भी सोचते हैं, हम देख सकते हैं कि यह उठाना एक तार्किक मुद्दा है। यह एक महत्वपूर्ण बात है। वास्तव में, हम उत्पत्ति 22 और इब्राहीम द्वारा इसहाक के बलिदान पर वापस जा सकते हैं और देख सकते हैं कि उसी प्रकार का प्रश्न पूछा जा रहा है। हम उस पर दूसरी बार वापस आएं। तो, भगवान के खिलाफ, भगवान की नीतियों के खिलाफ आरोप का एक पहलू, भगवान की प्रकृति पर सवाल नहीं उठाता है; यह उनकी नीतियों पर सवाल उठाता है। तो, इसका एक पक्ष यह है: क्या धर्मी लोगों की समृद्धि के लिए यह वास्तव में अच्छी नीति है?

### **अय्यूब का आरोप: धर्मी के लिए कष्ट सहना अच्छा नहीं है [5:49-6:47]**

अब, जब अय्यूब पर विपत्तियाँ आती हैं और विपत्ति उसे घेर लेती है, तो हम पाते हैं कि जैसे ही वह ईश्वर के साथ बातचीत करना शुरू करता है, उसे एक अलग चुनौती मिलती है। उनकी चुनौती है: "आप जानते हैं, भगवान, क्या आपके लिए धर्मी लोगों को कष्ट देना वास्तव में एक अच्छा विचार है? मेरा मतलब है, हम अच्छे लोग हैं। हम आपकी तरफ हैं; हम आपकी टीम में हैं। ऐसा क्यों है क्या हम कष्ट सहते हैं? यह धर्मी लोगों को कष्ट सहने देने की बहुत अच्छी नीति नहीं लगती है।"

और आप समस्या देख सकते हैं। चुनौती देने वाला कह रहा है, "नेक लोगों की समृद्धि के लिए यह अच्छी नीति नहीं है।" अय्यूब इस मुद्दे को उठा रहा है: "धर्मी लोगों को कष्ट सहना अच्छी नीति नहीं है।" भगवान को क्या करना है? क्या बाकि है? ऐसा क्या है कि भगवान को कार्य करना चाहिए? उचित नीति क्या होगी?

### **पुस्तक का फोकस: जब चीजें गलत हो जाती हैं तो आप भगवान के बारे में कैसे सोचते हैं?**

**[6:47-7:58]**

अब हम किताब देखेंगे. यह पुस्तक वास्तव में इसी को संबोधित करने का प्रयास कर रही है। जब सब कुछ गलत हो जाता है तो हम भगवान की नीतियों के बारे में कैसे सोचते हैं? उस अर्थ में, चुनौती देने वाला अय्यूब पर गलत इरादों का आरोप नहीं लगा रहा है। वह कह रहा है कि हमें नहीं पता. हम नहीं जानते कि अय्यूब के इरादे क्या हैं क्योंकि आपने, हे भगवान, आपने उस स्थिति को सामने नहीं आने दिया है। वह स्पष्टतः धर्मी है। ऐसा प्रतीत होता है कि सब कुछ ठीक चल रहा है, लेकिन आपने उसे इतना समृद्ध किया है कि हम वास्तव में नहीं जानते कि वह वास्तव में धर्मी है या नहीं। एकमात्र तरीका जिससे हम यह बता सकते हैं कि अय्यूब धर्मी है या नहीं, लाभ छीन लेना है। यह एक स्पष्ट रणनीति है और एक बार जब आप इसके बारे में सोचते हैं तो यह वास्तव में स्पष्ट हो जाता है। परीक्षण करने का यही एकमात्र तरीका है। उस अर्थ में, फिर से, पुस्तक पीड़ा के बारे में नहीं है। किताब धार्मिकता के बारे में है. अय्यूब की धार्मिकता का स्वभाव क्या है, उसकी शक्ति क्या है?

### **निष्कर्ष: मैं भगवान हूँ, आप नहीं, पावर कार्ड [नहीं] [7:58-8:40]**

अब, जब हम पुस्तक के अंत तक पहुँचते हैं, तो पुस्तक इसका समाधान कैसे करती है, और हम इस पर बाद में अधिक विस्तार से चर्चा करेंगे, लेकिन मैं कार्ड मेज पर रखने जा रहा हूँ। कुछ लोग सोचते हैं कि जब तक आप पुस्तक के अंत तक पहुँचते हैं, आपको "मैं भगवान हूँ, आप नहीं हैं" की पंक्ति के साथ एक और कथन मिल गया है। और इसके साथ यह निहितार्थ आता है, इसलिए अपने काम से काम रखो, या इसलिए मैं जो चाहूँ वह कर सकता हूँ, या तुम तुलना में बेकार हो, या बस चुप रहो। आप जानते हैं, हमें यह आभास होता है कि ईश्वर बस पावर कार्ड खींच रहा है। तुम्हें पता है, मैं भगवान हूँ, तुम नहीं हो।

### **निष्कर्ष: मैं भगवान हूँ, मुझ पर विश्वास करो, ट्रस्ट कार्ड [हां] [8:40-9:24]**

और मुझे नहीं लगता कि यह वास्तव में बताता है कि किताब कहां पहुंचती है। ऐसी भावना है कि मैं भगवान हूँ, और आप नहीं हैं, लेकिन उन अन्य निहितार्थों के साथ नहीं। यह इस पंक्ति के समान है, "मैं ईश्वर हूँ जो अत्यंत बुद्धिमान और शक्तिशाली है। और इसलिए, मैं चाहता हूँ कि आप मुझ पर

भरोसा करें, तब भी जब आप न समझें।" वह पावर कार्ड नहीं है. वह एक करुणा कार्ड है. वह एक भरोसे का कार्ड है. "मैं परम बुद्धिमान और शक्तिशाली भगवान हूँ। मुझ पर विश्वास करो।"

### **उद्देश्य: ईश्वर इस संसार में कैसे कार्य करता है? [9:24-11:00]**

पुस्तक का उद्देश्य, हमें जीवन के सबसे कठिन समय में भी ईश्वर के बारे में भरोसेमंद और भरोसेमंद सोचने में मदद करना है। हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि किसी तरह उनकी नीतियां संदिग्ध हैं. ऐसा सोचना आसान है क्योंकि जब चीजें गलत हो रही होती हैं, तो हम दोष देने के लिए किसी को ढूंढते हैं, और भगवान को दोष देना सबसे आसान है।

तो, यह विचार कि ईश्वर संसार में कैसे कार्य करता है? हम अपनी पीड़ा को कैसे समझें ताकि हम ईश्वर पर भरोसा करने में सहज महसूस कर सकें? अगर हम सोचें कि वह वही है जो दुख लेकर आया है, तो उस पर भरोसा करना मुश्किल होगा। और इसलिए, हमें सीखना होगा कि इस बारे में कैसे सोचा जाए कि वह दुनिया में कैसे काम कर रहा है।

जब परमेश्वर वास्तव में अय्यूब को उत्तर देता है, जब वह अंतिम अध्यायों में अय्यूब की स्थिति के बारे में बात करता है, तो वह हमसे इस बारे में बात करता है कि वह दुनिया में कैसे काम करता है। और इसलिए, जब हम पुस्तक के उद्देश्य के इस बड़े ढांचे के बारे में बात करते हैं तो हम इसी पर गौर करने जा रहे हैं।

भगवान की नीतियों के बारे में कैसे सोचें और भगवान के बारे में अच्छा सोचें, आपदा आने पर भगवान के बारे में उचित तरीके से सोचें।

यह डॉ. जॉन वाल्टन और अय्यूब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 6 है, पुस्तक का उद्देश्य।

[11:00]